प्रातःक्लास 17/4/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति । बाप ने अपना और इस सृष्टि चक्र का परिचय तो दिया है। यह तो बच्चों की बुद्धि में बैठ गया है कि सृष्टि का चक्र हू ब हू रिपीट होता है। जैसे नाटक बनाते हैं, फिर वह रिपीट होती है। तुम बच्चों की बुद्धि में यह चक्र फिरना चाहिए। तुम्हारा नाम ही है स्वदर्शनचक्रधारी। तो बुद्धि में फिरना (चाहिए)। बाप द्वारा जो नॉलेज मिलती है वह ग्रहण करनी है। ऐसी ग्रहण हो जो पिछाड़ी में भी बाप द्वारा रचना के आदि, मध्य, अंत की याद रहे। बच्चों को बहुत अच्छी रीत पुरुषार्थ करना चाहिए। यह है शिक्षा। बच्चे जानते हैं यह शिक्षा सिवाय हम ब्राह्मणों के कोई भी शूद्र नहीं जानते। वर्णों का फ़र्क तो है ना। मनुष्य समझते हैं हम सभी मिलकर एक हो जावेंगे। तुमको एक तो होने का है नहीं। अभी इतनी सारी दुनिया तो एक हो नहीं सकती। यहां सारे विश्व में एक राज्य, एक धर्म, एक भाषा चाहिए। सतयुग में था। अभी नही है। विश्व की बादशाही थी। जिसके मालिक यह (ल.ना.) थे। तुमको यह बतलाना है कि विश्व में शान्ति का राज्य यह है। सिर्फ़ भारत की बात नहीं। जब इन्हों का राज्य होता है तो सारे विश्व में शान्ति हो जाती है। यह सिवाय तुम्हारे और कोई नहीं जानते। सभी हैं भक्त। फ़र्क भी तुम देखते हो। भक्ति अलग है, ज्ञान अलग है। यह तो समझाया गया है ऐसे नही कि भक्ति नहीं करने से कोई भूत–प्रेत खा जावेंगे। नहीं तुम तो बाप के बने हो। तुम्हारे में जो भी भूत है वह सब निकल जानी है। पहले नम्बर में भूत है देह अभिमान। इनको निकालने लिए ही बाप देही अभिमानी बनाते रहते हैं। बाप को याद करने से कोई भी भूत सामने आवेगा नहीं। 21 जन्म लिए कोई भूत आता नहीं। यह 5 भूत है रावण सम्प्रदाय के। रामराज्य और रावण राज्य कहते तो हैं ना। रामराज्य अलग है, रावणराज्य अलग है। रावणराज्य में भ्रष्टाचारी, रामराज्य में श्रेष्ठाचारी होते हैं। इस ..... का तुम्हारे सिवाय कोई को पता नहीं। तुम्हारे में भी जो समझू , होशियार हैं। वह अच्छी रीत समझ सकते हैं; क्योंकि माया बिल्ली कोई कम नहीं है। कब–2 पढ़ाई भी छोड़ देते हैं। सेन्टर पर ही नहीं जाते। दैवीगुण धारण नहीं करते। आँखें भी धोखा देती हैं। कोई चीज़ अच्छी देखते हैं तो खा लेंगे। तो अभी बाप समझाते हैं तुम बच्चों की तो यह है एमऑब्जेक्ट। तुमको ऐसा बनना है। ऐसे दैवी गुण धारण करनी है। यथा राजा–रानी तथा प्रजा। सभी में दैवी गुण होते हैं। वहां आसुरी गुण होते ही नहीं। असुर होते ही नहीं। तुम ..... कुमार–कुमारियों के सिवाय और कोई नहीं है जो (इ)न बातों को समझे। तुमको शुद्ध अहंकार है। बाकी तो ..... दुनियां में अशुद्ध अहंकार है। तुम अभी आस्तिक बन गये हो; क्योंकि मीठे–2 रूहानी बाप के बने हो। यह ..... जानते हो कोई भी देहधारी कब राजयोग का ज्ञान वा याद की यात्रा सिखाये नहीं सकते। यह (ब्रह्मा) भी नहीं सिखलाते हैं। एक बाप ही सिखलाते हैं। तुम सीखकर फिर सिखलाते हो। तुमसे पूछेंगे तुम(को) यह किसने सिखाया? तुम्हारा गुरू कौन है? क्योंकि टीचर तो यह आध्यात्मिक बातें नहीं सिखलाते हैं। यह तो गुरू ही सिखलाते हैं। यह तो बच्चे जानते हैं हमारा गुरू नहीं; परन्तु सद्गुरू है। उनको ही सुप्रीम कहा जाता है। ड्रामा अनुसार सतगुरू खुद ही आकर अपना परिचय देते हैं और जो समझाते हैं सत्य ही समझाते हैं। सच्च खण्ड में जाने लिए। सत्य तो एक ही है। बाकी कोई भी देहधारी को याद करना वह है झूठ। देहअभिमान में आकर देहधारी को याद करते हैं। तुमको तो बाप देहीअभिमानी बनाते हैं। तुम हो देहीअभिमानी। एक बाप को याद करने वाले। उस एक को ही कोई ईश्वर, कोई भगवान, कोई क्या कहते हैं। बहुत नाम हैं। जितनी भी जातियां हैं सभी की भाषा में और2 नाम हैं। वास्तव में उनका नाम तो है ही एक। भक्तिमार्ग में बहुत नाम रख दिये हैं। यहां तो एक को ही याद करना है। सभी आत्माएं भी एक हैं। बाप भी एक है। बाकी हर आत्मा के कर्म तो अपनी–2 है। कितने ढेर करोड़ों आत्माएं हैं। सभी के कर्म अपने–2 हैं। एक जैसे कर्म हो नहीं सकते। अगर एक जैसे कर्म हों फिर तो सभी के फीचर्स एक जैसे हो जायें। कब भी एक जैसे हो न सके। थोड़ा फ़र्क ज़रूर होगा। यह नाटक तो एक ही है। सृष्टि भी एक ही है। अनेक

है। यह भी गपोड़ा लगाते हैं ऊपर–नीचे दुनियाएं हैं। ऊपर जो तारे हैं उनमें भी दुनियाएं हैं। बाप है यह किसने किसको बताया है कि ऊपर–नीचे सृष्टि है। किसने बताया है? उसका नाम लेना चाहिए ना। तो नाम फिर लेते हैं शास्त्रों का। शास्त्र तो ज़रूर कोई ने लिखी होगी। लिखने वाले ज़रूर ऊँच ठहरे। जानने बिगर तो कोई लिख भी न सके। मनुष्य शास्त्र पढ़–2 कर फिर शास्त्रों के जानने वाले हो जाते हैं। पूछो शास्त्र किसने बनाई? तो व्यास का नाम लेते हैं। वशिष्ट का भी नाम लेते हैं। अभी वह कोई लिखकर नहीं गये हैं। यह ड्रामा का बनाया खेल है। किसने बनाया यह नहीं जान सकते। जैसे बाप को नहीं जान सकते तो शास्त्र बनाने वाले को भी नहीं जान सकते। यह सभी नाम भक्तिमार्ग में रख दिया है। यह ड्रामा में नूँध है। सेकण्ड व सेकण्ड जो भी सारी दुनियां में पार्ट बजता है यह भी ड्रामा का बना बनाया प्लैन है। तुम बच्चों की बुद्धि में आ गया है। यह चक्र कैसे फिरता है सभी मनुष्य मात्र जो भी हैं वह कैसे पार्ट बजाते हैं। बाप ने बताया है सतयुग में तो सिर्फ़ तुम्हारा ही पार्ट होता है। नम्बरवार आते हैं पार्ट बजाने। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। तुम बच्चों को भी फिर औरों को समझाना पड़ता है। बड़े–2 सेन्टर्स खुलते रहेंगे। तो वहां बड़े–2 आदमी भी आवेंगे, ग़रीब भी आवेंगे। अक्सर करके ग़रीबों की बु(ि)द्धि में झट बैठता है। बड़े–2 आदमी भल आते हैं फिर कोई काम पड़ गया तो खलास। कहेंगे फुर्सत नहीं है। प्रतिज्ञा करते हैं हम अच्छी रीत पढ़ेंगे फिर अगर नहीं पढ़ते हैं तो धक्का लग जाता है। माया और ही अपने तरफ खैंच लेती है। बहुत बच्चे हैं जो पढ़ते–2 पढ़ना ही बन्द कर देते हैं। पढ़ाई में मिस रहे तो ज़रूर फेल हो पड़ेंगे। स्कूल में भी जो अच्छे–2 बच्चे होते हैं वह कब शादियों आदि पर, इधर–उधर जाने की छुट्टी नहीं लेते हैं। बुद्धि में रहता है हम अच्छी रीत पढ़कर स्कॉलरशिप लेंगे; इसलिए पढ़ाई मिस करने का ख़्याल नहीं करते। उन्हों को पढ़ाई के सिवाय कुछ भी मीठा नहीं लगता है। समझते हैं मुफ्त टाइम वेस्ट हो जावेगा। यहां तो एक ही टीचर पढ़ाने वाला बैठे हैं तो रोज़ पढ़ना चाहिए ना। पढ़ाई को छोड़ना न चाहिए। इसमें भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हैं। देखते हैं पढ़ाने वाले अच्छे हैं तो पढ़ाने में भी दिल खुश होती है। टीचर का भी नाम बाबला(बाला) होता है। उनकी ग्रेड बढ़ती है। ऊँच पद मिलता है। यहां भी बच्चे जो जितना पढ़ते हैं उतना ही ऊँच पद पाते हैं। एक ही क्लास में कोई पास हो ऊँच मर्तबा पा लेते हैं ,कोई कम। सभी की कमाई एक जैसी नहीं होती है। बुद्धि पर भी सारा मदार है ना। कोई की बहुत अच्छी कमाई होती है। वह तो मनुष्य मनुष्य को पढ़ाते हैं। तुम तो समझते हमको बेहद का बा(प) पढ़ाते हैं तो कितना अच्छी रीत पढ़ना चाहिए। उसमें गफ़लत न करनी चाहिए। पढ़ाई को छोड़ना न चाहिए। एक/दो के ट्रेटर भी बन पड़ते हैं। एक/दो को उल्टी बातें सुनाकर परमत पर नहीं चलना चाहिए। श्रीमत के लिए कुछ भी कहे तुमको तो निश्चय है ना। बाप पढ़ाते हैं तो फिर वह पढ़ाई छोड़नी न चाहिए। बच्चे तो सभी नम्बरवार ही हैं। तो बाप अव्वल नम्बर में है। उनकी पढ़ाई छोड़नी न चाहिए। इस पढ़ाई को छोड़ फिर कहां जावेंगे? और कहां तो यह पढ़ाई मिल न सके। शिवबाबा पास ही पढ़ना है। सौदा भी शिवबाबा से करना है। कोई भी उल्टी–सुल्टी बातें सुनाकर मुँह ही मोड़ देते हैं। यह बैंक भी शिवबबा के हैं ना। समझो कोई बाहर में सतसंग आदि शुरू करते हैं। कहते हैं हमको तो शिवबाबा के बैंक में जमा करना है। कैसे जमा करेंगे? कनेक्शन तो कुछ भी नहीं । कनेक्शन बिगर तो कुछ भी जमा न हो सके। आनन्द किशोर का बाप है कहते हैं हमारा ज्ञान भी इन जैसा ही है। मैं यहां से ही सीख कर यहां का ही ज्ञान देता हूं। अरे, तुम तो दुकान निकाल बैठे। शिवबाबा के भण्डारे में तो कुछ भी जमा होता नहीं। तो वहां लेंगे फिर कैसे? शिवबाबा के साथ कनेक्शन भी तो चाहिए ना। यह तो शिवबाबा का रथ है। उनके बिगर जावेंगे कहां? उनके ख़जाने में कैसे पहुंचेगा? बच्चे जो आते हैं शिवबाबा के खज़ाने में पहुंचाते हैं। एक पैसा भी देते हैं वह सौणा(सौगुणा) हो जाता है। शिवबाबा कहते हैं तुमको उनके

बदली महल मिल जावेंगे। यह तो जानते हो यह पुरानी दुनियां सारी खतम हो जाने वाली है। धनवान अच्छे–2 बहुत आते हैं। कुटुम्ब परिवार पलते रहते हैं। ऐसे कोई नहीं कहेंगे शिवबाबा के भण्डारे से परवरिश नहीं होती है। बाबा के पास कितने परिवार आये थे। सभी की पालना हुई ना। शिवबाबा के भण्डारे से। कोई ग़रीब है, कोई साहूकार। साहूकार ग़रीब भी पलते हैं। इसमें डरने की तो बात ही नहीं। चाहते हैं हम बाबा के बन जावें; परन्तु लायक भी हो ना। माथा खपाने वाली नहीं चाहिए। इसमें भी तो तन्दुरुस्त चाहिए। ज्ञान भी दे सके। गवर्मेन्ट भी ऐसी–जैसी को नहीं लेती है। अच्छी रीति जांच कर तन्दुरुस्त को ही लेंगे। बीमारों को तो नहीं बैठ सम्भालेंगे। जो न अपनी, न दूसरों की सर्विस करेंगे ऐसे को लेकर क्या करेंगे? ग़रीब तो दुनिया में करोड़ों हैं। कितने को नौकरी नहीं मिलती है। भूख मरते रहते है। बाप सभी को थोड़े ही अलौ(अलाउ) करेंगे। सभी को देखा जाता है। सर्विस कर सकते हैं या नहीं। लाचारी हालत में भण्डारे आदि की दरकार है तो लगा देते हैं। अभी उनको मिलेगा। नम्बरवार तो हैं ना। सभी अपना पुरुषार्थ करते रहते हैं। कोई अच्छा पुरुषार्थ करते–2 फिर अपसेन्ट हो जाते हैं। कारणे–आकरणे आना छोड़ देते हैं। तो फिर तन्दुरुस्ती भी ऐसी हो जाती है। एवर तन्दुरुस्ती बनने लिए तो यह सब सिखाया जाता है। जिनको शौक है समझते हैं याद से हमारे पाप कटते हैं। वह अच्छी रीत पुरुषार्थ करते रहते हैं। कोई तो लाचार बैठेंगे। टाइम पास हो तो जावें। ऐस(से) भी बहुत हैं। यह है अपन जांच करनी है। बाप समझाते रहते हैं गफ़लत करेंगे तो वह पता पड़ जावेगा। यह तो किसको पढ़ाये नहीं सकते; क्योंकि पढ़ाई पर ध्यान न है। प्वाइन्ट्स आदि याद नहीं है तो किसको पढ़ा न सके। फिर बाबा भी डोरापा लिख देते हैं। पूरा पढ़ते नहीं; इसलिए पढ़ा न सके। फिर ब्राह्मणी की मांगनी करते रहते हैं। बाबा कहते हैं सात रोज़ में तुमको लायक ब्राह्मण और ब्राह्मणी बन जाना चाहिए। जो फिर नाम का ब्राह्मण–ब्राह्मणी नहीं चाहिए। ब्राह्मणी वह जिनके मुख में बाबा के गीता का ज्ञान कंठ हो। ब्राह्मणों में भी नम्बरवार होते हैं। यहां भी ऐसे हैं। पढ़ाई पर अटेन्शन नहीं तो क्या जाकर बनेंगे? हर एक को अपना पुरुषार्थ करना है। सर्विस का सबूत देना चाहिए। तब समझ में आवेगा यह पद पावेंगे। बाबा से कोई पूछे तो बाबा बता सकते हैं। फिर वह कल्प–कल्पांतर के लिए हो जावेगा। पढ़ते पढ़ाते नहीं हैं तो अन्दर में समझना चाहिए मैं पूरा पढ़ा नहीं हूँ। तब पढ़ा नहीं सकता हूँ। बाबा भी पत्र लिख देते हैं तुम सीखते नहीं हो जो पढ़ा सको। फिर ब्राह्मणी भी क्या आकर करेगी? मुरली ही सुनानी है। कोई मुरली को विस्तार एड कर समझाते हैं। एडीशन तो तुम बच्चियां भी करती हो ना। सिर्फ़ सीधी मुरली पढ़ने में तो 10–15 मिनट लगेंगे। तो जैसे यह बच्चियां पढ़कर समझा सकती हैं वैसे वह भी कर सकते हैं। जैसे ना(भा) हैं। कितने दिनों से सेन्टर है; परन्तु ब्राह्मणी बिगर सेन्टर चला नहीं सकते हैं। बाबा कहते पढ़ाने लायक क्यों नहीं बनते हो? इतनी पत्थर बुद्धि हो। कहां तक ब्राह्मणी को भेजेंगे? आप समान नहीं बनाते, पढ़ाते नहीं तो ब्राह्मणी को भेज कर क्या करेंगे? जहां अच्छी रीत पढ़ते हैं उन्हों को मदद देनी चाहिए। बहुतों को आपस में मतभेद रहता है। एक/दो में ही लट(क)कर मरकर पढ़ाई छोड़ देते हैं। कोई लास्ट नम्बर में देख स्टूडेन्ट अपनी पढ़ाई थोड़े ही छोड़ देंगे। जो करेंगे सो पावेंगे। एक/दो के बातों में आकर तुम पढ़ाई क्यों छोड़ते हो? यह भी ड्रामा तकदीर में न है। दिन–प्रतिदिन पढ़ाई ज़ोर होती जावेगी। सेन्टर खुलते रहते हैं। यह शिवबाबा का खर्चा थोड़े ही है। बच्चों का ही खर्चा है। यह दान तो सबसे अच्छा है ना। इस दान में तो अल्पकाल का सुख मिलता है न। इनसे तो 21 जन्मों का प्रारब्ध मिलता है। तुम जानते हो हम आते ही हैं नर से नारायण बनने। जो अच्छ(ा) पढ़ते हैं उनको फॉलो क(रना) है। कितना रेग्युलर पढ़ाई पढ़ना चाहिए आपस में ही लड़–झगड़ पड़ते हैं। अक्सर करके पुरुषों का झगड़ा चलता है। अपने तकदीर से रूस पड़ते हैं; इसलिए मैजॉरिटी

माताओं की है। नाम भी माताओं का बाला होता है। ड्रामा में माताओं की उन्नति भी नूँध है। यहां माताएं पुरुष के गुलाम बन जाती है। पति तुम्हारा गुरू, ईश्वर है। जो कहते वह आज्ञा माननी है। पुरुष के पहले–2 आज्ञा ही होती है काम–कटारी चलाने की। हथियाला बांधा और जाते हैं हनीमून करने। विकार में गिरने लिए कितना खुशी से जाते हैं। जैसे कि अमृत का ग्लास मिलता है। बाप कहते हैं उनसे तो तुम विकारी ,पतित बने हो। अभी पावन बनना है। पावन दुनियां में रावण राज्य होता नहीं। रावण का नाम ही नहीं। रावण राज्य में फिर पवित्रता है नहीं। यह है वैश्यालय। अभी बाप अमृत देते हैं जिससे तुम शिवालय में जाते हो। वहां 21 जन्म विख होता नहीं। यह सारा खेल बाप समझाते हैं। रावण उल्टा रास्ता बताते हैं। बाप सुल्टा रास्ता बताते हैं। बाप कहते हैं यह तुम्हारा अन्तिम जन्म है। इसमें ही पवित्र होना है। पास्ट इज़ पास्ट। तुमको रावण राज्य मे उल्लू बनना ही था। अभी अल्ला आया है तो सुधरना है। कौड़ी से हीरे जैसा बनना है। रामराज्य में च(ल)ना है तो पवित्र बनना है। बिख के लिए अबलाओं पर कितने अत्याचार होते हैं। कितना हंगामा होता है। आर्यसमाजी भी कितना हंगाम(ा) करते हैं। यह (भ)ी सब ड्रामा में नूँध है। इनको कुछ भी ख़्याल नहीं कि(या) जाता है। गायन है ना तुम भौंको तो हमको नींद आवे। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ मामेकं याद करो। और कोई बात सुना(नो) ही नहीं। आत्माभिमानी हो रहो। शरीर ही नहीं तो दूसरे का सुनेंगे ही कैसे? यह पक्का अभ्यास करो। हम आत्मा हैं। अभी हमको वापस जाना है। नाम–रूप में फंसने की बात ही नहीं। बाप कहते हैं यह सभी त्याग करो। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। इस पर ही सारा मदार है। बाप ही(की) श्रीमत पी(पर) चलना है। 21 जन्म कब अपवित्र नहीं बनेंगे। यह है ही पतित दुनियां नर्क। अभी स्वर्ग की स्थापना होती है। इसके लिए बच्चों को अच्छी रीत पुरुषार्थ करना चाहिए। बाप कहते हैं धंधा भल करते रहो। भूख तो नहीं मरना है। आठ घंटा धंधा करने का देते हैं। बाकी 16 घंटा का हिसाब निकालो। आठ घंटा आराम करो, बाकी आठ घंटा इस गवर्मेन्ट में सर्विस करो। यह भी मेरी नहीं सारे विश्व की सेवा करते हो। अपनी भी सर्विस, तो विश्व की भी सर्विस करते हो। (उ)सके लिए टाइम निकालो। बाकी आठ घंटा जो चाहिए सो करो। मुख्य है याद की यात्रा। पावन बनना है। टाइम वेस्ट न करना चाहिए। जि(त)ना टाइम निकाल सको। उस गवर्मेन्ट का मानते हो जिससे क्या मिलेगा हज़ार, दो या 5 सौ मिलेगा। इस पाण्डव गवर्मेन्ट का मान(ने) से तुम पदमापदम भाग्यशाली बनते हो। तो किसका मानना चाहिए? वह है रावण मत, यह है राम की मत। टाइम निकालो जिससे ऊँच वर्सा पा सको। आठ रत्न बनते हैं तो ज़रूर आठ घंटा शिवबाबा को याद करते हों। भक्ति मार्ग में बहुत याद करते हैं। (टाइ)म गंवाते हैं; परन्तु कुछ मिलता नहीं। वर्सा तो मिल न सके। .... वा जप, तप कोई बाप थोड़े ही हैं। ज्ञान मार्ग में तो बाप से वर्सा मिलता है। बाप बहुत ही युक्तियां बताते हैं; परन्तु किसकी तकदीर में नहीं है तो गफ़लत करते हैं। बड़ा ही नुकसान हो जावेगा। अनन्य ब्रह्मा कुमारियां गफ़लत नहीं करती हैं। श्रीमत पर चलते हैं, कोई बात पर झगड़ते नहीं हैं। ज़ेवर पर, कपड़े आदि पर कोई झगड़ा नहीं। अगर कोई में है तो थर्ड ग्रेड समझो। भल सर्विस अच्छी करते; परन्तु घर में झगड़ा है, आशाएं हैं ,कुकड़ ज्ञानी समझो। कुकड़ योगी नहीं कहा जाता। कुकड़ ज्ञानी। पहले तो योग चाहिए। जिससे पाप भस्म हो। बाप कहते हैं तुम मुझे याद करो तो विश्व का मालिक बनाऊँ। तुम कहते हो बाबा हम आपको भूल जाता हूँ। लौकिक बाप को कब बच्चा भूल सकता है क्या? पारलौकिक बाप जिससे बेहद का वर्सा मिलता है उनको तुम भुलाते क्यों हो? इसलिए यहां बिठाया जाता है। तो आदत पड़ जाये। बाप तो लाइट हाउस है ना। उनको सर्च लाइट देनी ही है। बच्चे अपने से पूछें हम याद में थे या और कोई संकल्प थी? माया बड़ी दुश्मन है। बहुत ही प्वाइन्ट्स से हरा देती है। अच्छा, बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। नमस्ते।